An Open Letter to the New Year

(एक खुला पत्र - 2018 के नाम)

Dear 2018,

एक माह से हम आपका बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। आखिर वो दिन आया कि आया।

नवीन प्रभाकर की पहली किरण जब गुनगुनाकर नये वर्ष का पैगाम लेती हुई नित नूतन पर्व का संचार करती आगे बढ़ रही है, तब मन की बाहें फैलाकर हम आपका खुले दिल से स्वागत करते है।

भाई 2018, इस वर्ष तुम हमारे लिए क्या सौगात लाओगे? हम अपनी पसंद की **18 सौगाते** खुद ही बता देते है -

1. जिसमें नई सुबह, नई शाम, नई मज़िलें, नए मुकाम, नए लक्ष्य, नए हौसले, नई दिशा, नए काफिले, नई भाषा, नई आशा, नई विधि, नई सिद्धि, नई अभिलाषा, नई वृद्धि, नई रीत, नई प्रीत, नई मुरादे, नये इरादे, नया उमंग, नये तरंग, नये गीत, नया संगीत, नया रंग, नया जुनून, नये उसूल, नये वजूद, नई चाह, नई राह, नई रफ्तार, नई गुफ्तार, नई किताब, नये ख्वाब, नई दृष्टि, नई सृष्टि, नया हाल, नई चाल, नई धुन, नया सुकून, नई तकदीर, नई तसवीर, नया चिंतन, नयी लेखनी, नई प्रतिज्ञा, नया युग, नव मंत्र, नव निर्माण, नव मुक्ति, नव युक्ति, नव शक्ति, नवस्फूर्ति, नव प्रवाह, नव प्रेरणा, नव साधना, नव चेतना, नव अभिव्यक्ति, नव अनुभूति, नव उदय, नव उड़ान, नव जागरण, नव सृजन - सब कुछ नवीन हो, एक ऐसा नव प्रभात तुम लेकर आना।

2. पुरानी और परायी, व्यक्त और व्यर्थ गलियों को अलविदा कहते आना।

3. आलस्य और अलबेलापन, थकावट और रूकावट के पृष्ठ पर तुम निवृत्ति का हस्ताक्षर करते आना।

4. भूल जाये सब जख्म पुराने, ऐसा मरहम तुम लेकर आना।

5. फर्श पे न पैर रहे, अर्श में सदा उड़ते रहे, फरिश्तों के वो पंख तुम लेकर आना।

6. अनुभूतियों के हीरे मोती रत्नों की खान तुम भरकर लाना।

7. ताज, तख्त और तिलक की ईश सौगात तुम लेते आना।

8. बहिर्मुखता की भीड़ में एकान्त की अंगूठी तुम पहनाने आना।

9. पुरुषार्थ के इस गगन पथ पर इंद्रधनुष तुम सजाकर लाना।

10. ब्राह्मण परिवार में एकता के अखंड किले को अभेध बनाते जाना।

11. व्यर्थ और दम्भ का नशा चूर हो ऐसा नारायणी नशा तुम लेकर आना।

12. मोह की दुर्गंध से भरी इस नगरी में नष्टोमोहा का आध्यात्मिक इत्र तुम लेकर आना।

13. शुष्कता और जड़ता से भरी इस बंजर धरा पर तुम प्रेम सुधा रस बरसाने आना।

14. विश्व के हम मित्र बने - ऐसी भावना के बीज तुम अंकुरित करके लाना।

15. जहान के रहनुमा बने ऐसी साधना के द्वार पर तुम दस्तक देते आना।

16. सर्व प्रकार के अंधकार नष्ट हो ऐसी ज्ञान मशाल तुम लेकर आना।

17. विश्व शान्ति और आध्यात्मिक क्रान्ति का बिगुल तुम लेकर आना।

18. जीवन की हर डगर पर जीत का झंडा तुम गाड़ते आना। पाण्डव शिवशक्ति सेना के विजय का नगाड़ा कल्प पहले मुआफ़िक तुम बजाते जाना।

हम भी आपको रिटर्न में **संकल्प 2018** देते है, जो कि एक प्रतिज्ञा के रूप में है-

परमात्म अवतरण की पावन बेला पर परमात्मा को साक्षी मानते हुए हम भी आपसे ये प्रतिज्ञा करते है कि हम सदा नवीनता का कंगन पहनकर रखेंगे।

आज जीवन की पुस्तक के नये पृष्ठ पर परिवर्तन का इतिहास रचने का आगाज हम करते है।

फिर से आपका और नवीनता के प्रभाकर का बारंबार हदयपूर्वक सुस्वागतम, सुस्वागतम, सुस्वागतम।

शुक्रिया सह

आपका अपना,
रूहानी राही